

**लीझा** वि. (देश.) 1. (किसी रसदार फल अथवा गन्ना आदि का रस निकालने के बाद शेष) रसहीन या निस्सार (पदार्थ) 2. व्यर्थ।

**लीझी** स्त्री. (देश.) 1. लगे हुए उबटन आदि को हथेली से मलकर निकालने पर बनी बत्ती 2. गन्ने का रस निकालने के बाद शेष खोई, सीठी।

**लीड** स्त्री. (अं.) 1. नेतृत्व 2. बढ़त 3. बिजली की तार।

**लीडर** पुं. (अं.) नेता, अगुआ।

**लीडरी** स्त्री. (देश.) लीडर होने का कार्य या गुण।

**लीढ** वि. (तत्.) चाटा, चखा या खाया हुआ।

**लीतड़ा** पुं. (देश.) फटा-पुराना जूता।

**लीथोग्राफ** पुं. (अं.) लीथो की छपाई, दे. लिथोग्राफी।

**लीद** स्त्री. (देश.) घोड़ा, ऊँट, हाथी आदि की विष्ठा।

**लीन** वि. (तत्.) 1. जिसका लय हो चुका हो, डूबा हुआ 2. मग्न किसी विचार या भाव में तन्मय, जिसे शेष दुनिया की सुध न हो 3. समय निकल जाने के कारण निष्प्रभावी। lapsed

**लीनता** स्त्री. (तत्.) 1. लीन होने की क्रिया, भाव या स्थिति 2. जैन. साधनावस्था में उदासीनता की स्थिति।

**लीनो टाइप मशीन** स्त्री. (अं.) मुद्र. पुराने समय में टाइप सेटिंग की एक प्रकार की मशीन।

**लीन्हें** अव्य. (देश.) 1. वश में होकर, बंधकर 2. के लिए, वास्ते 3. लिए हुए स.क्रि. लिया।

**लीपना** अ.क्रि. (तद्.) 1. किसी सतह पर कोई गाढ़ा लेप रखकर उसे बराबर मात्रा में फैलाना 2. गोबर का लेप करना 3. ला.अर्थ काम खराब करना।

**लीपापोती** स्त्री. (देश.) 1. लीपने ओर पोतने की क्रिया या भाव 2. ला.अर्थ वाक्चातुरी से दोष छिपाना।

**लीबर** पुं. (देश.) 1. गंदगी 2. कीचड़ 3. आँख का कीचड़ वि. मैल आदि से भरा हुआ।

**लीम** पुं. (देश.) 1. चीड़ वृक्षका एक प्रकार जिसकी लकड़ी तैलीय होती है 2. एक प्रकार का पक्षी।

**लीर** पुं. (देश.) 1. कपड़े का पट्टी जैसा टुकड़ा 2. पुराने गले हुए कपड़े का टुकड़ा, चीथड़ा, धज्जी।

**लील** पुं. (देश.) 1. नील 2. नीला घोड़ा वि. नीले रंग वाला अव्य. निगलकर।

**लीलक** पुं. (देश.) चमड़े का एक प्रकार जो सामान्य तौर पर देशी जूतों की नोंक पर लगाया जाता है।

**लीलना** स.क्रि. (देश.) 1. निगलना 2. जल्दी-जल्दी अधीर होकर खाना 3. ला.अर्थ दूसरे की संपत्ति हड़पना 4. नदी का स्थलीय भाग को तोड़ते हुए अपने में मिला लेना।

**लीलम** पुं. (देश.) खेल-खेल में, अनायास।

**लीलया** अव्य. (तत्.) लीला के रूप में, खेलवाड़ के रूप में, बिना किसी परिश्रम के, बहुत ही सहज में।

**लीला** स्त्री. (तत्.) 1. खेल, क्रीड़ा, नाटक 2. ईश्वर के सहेतुक कार्य या विशेष प्रयोजन से किए गए कार्य 3. भगवान के किसी अवतार के कार्यों का अभिनय 4. शृंगार रस की नायिका का एक प्रकार का हाव 5. छंद. 12 मात्राओं का एक छंद जिसके प्रत्येक चरण के अंत में जगण हो, 7 वर्णों का वर्णवृत्त (भगण, नगण और गुरु), 24 मात्राओं का एक छंद जिसमें 7, 7, 7, 3 पर यति हो वि. (देश.) नीला पुं. (देश.) नीला घोड़ा।

**लीला-कलह** पुं. (तत्.) झगड़े का नाटक।

**लीलागार** पुं. (तत्.) क्रीड़ागृह, क्रीड़ा के लिए प्रयुक्त स्थान।

**लीलागृह** दे. लीलागार।

**लीलागेह** दे. लीलागार।

**लीलातनु** पुं. (तत्.) भगवान् का अवतार रूप में धारण किया हुआ शरीर।

**लीलाधर** वि. (तत्.) लीला करने वाला (परमात्मा) पुं. ईश्वर।